इकाई 7 उत्पादन की शक्तियां, संबंध एवं प्रणाली

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 उत्पादन

- 7.2.1 मानवीय समाज का आधार: भौतिक उत्पादन
- 7.2.2 उत्पादन: सामान्य तथा ऐतिहासिक संवर्ग

7.3 उत्पादन की शक्तियां

- 7.3.1 उत्पादन शक्तियाँ: उत्पादन के साधन व श्रम शक्ति
- 7.3.2 उत्पादन की भौतिक शक्तियों में परिवर्तन
- 7.3.3 उत्पादन शक्तियों की प्रकृति

7.4 उत्पादन के संबंध

- 7.4.1 उत्पादन शक्तियों एवं संबंध में जुड़ाव
- 7.4.2 उत्पादन संबंधों के प्रकार
- 7.4.3 उत्पादन संबंधों की प्रकृति
- 7.4.4 उत्पादन संबंधों से उत्पादन शक्ति में बदलाव

7.5 उत्पादन प्रणाली

- 7.5.1 उत्पादन प्रणाली परिभाषा मे निर्णायक तत्व: अतिरिक्त उत्पादन
- 7.5.2 उत्पादन प्रणाली में विशिष्ट उत्पादन संबंध
- 7.5.3 उत्पादन प्रणाली की उत्पादन शक्तियों में बदलाव

7.6 उत्पादन की प्रणाली के विभिन्न स्वरूप

- 7.6.1 एशियाटिक उत्पादन प्रणाली
- 7.6.2 प्राचीन उत्पादन प्रणाली
- 7.6.3 सामन्तवादी उत्पादन प्रणाली
- 7.6.4 पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली

7.7 सारांश

7.8 शब्दावली

7.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

7.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

7.0 उद्देश्य

यह इकाई उत्पादन की शक्तियों, सम्बन्ध एवं प्रणाली के बारे में है। यह इकाई ऐतिहासिक भौतिकवाद के सिद्धांत के विभिन्न पक्षों का विवरण देती है। इस इकाई में हमने उत्पादन की महत्वपूर्ण धारणाओं के अंतर्गत उत्पादन की शक्तियों, सम्बन्धों एवं प्रणाली की चर्चा की है। इसको पढ़कर आपके द्वारा सम्भव होगा

- उत्पादन की शक्तियां, सम्बन्ध एवं प्रणाली-इन तीनों अवधारणाओं की व्याख्या

- इन अवधारणाओं को एक-दूसरे से अलग करके समझना
- समाज के सम्पूर्ण मार्क्सवादी दृष्टिकोण के अंतर्गत इन अवधारणाओं को समझना।

7.1 प्रस्तावना

ऐतिहासिक भौतिकवाद पर इकाई 6 में हमने मानवीय प्रगति के मार्क्सवादी सामाजिक सिद्धांत की चर्चा की थी। यहाँ इकाई 7 में हमने इस सिद्धांत की प्रमुख तीन अवधारणाओं पर ध्यान केंद्रित किया है। इन अवधारणाओं, अर्थात् उत्पादन की शक्तियों, सम्बन्ध व प्रणाली से आपका परिचय इकाई 6 में कराया जा चुका है। इन्हीं अवधारणाओं को अब अधिक विस्तार से समझाया जा रहा है ताकि मार्क्स द्वारा इन विचारों के उपयोग को आप स्वयं समझ सकें। यह इकाई उन अवधारणाओं के बारे में ही है जिनसे मार्क्स ने ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धांत निर्मित किया है। इन्हीं अवधारणाओं के माध्यम से मार्क्स ने सामान्य रूप से समाज में परिवर्तन के नियम व विशिष्ट रूप से पूंजीवादी समाज में परिवर्तन के नियम को समझाया है। यह इकाई इन अवधारणाओं की व्याख्या करने का एक प्रयास है। इन अवधारणाओं से मार्क्स ने एक ऐसा सिद्धान्त विकसित किया, जिसके द्वारा उसके समकालीन समाज को समझा जा सके। उसने समाज में परिवर्तन हेतु प्रक्रिया के एक कार्यक्रम का भी निरूपण किया।

मार्क्सवादी अवधारणाओं को व्यवस्थित रूप से समझाने के लिए इस इकाई को मोटे तौर पर तीन भागों में बांटा गया है।

पहले भाग में आपको उत्पादन की शक्तियों की अवधारणा के बारे में जानकारी दी गई है। यह भाग इस अवधारणा के अर्थ तथा महत्व को समझाने का प्रयास है।

दूसरे भाग में उत्पादन के सम्बन्धों की अवधारणा के बारे में बताया गया है। यहाँ यह व्याख्या इस बात पर बल देती है कि ये सामाजिक सम्बन्ध हैं तथा इन्हें उत्पादन के भौतिक, तकनीकी पक्षों के साथ भ्रमित न किया जाए।

तीसरे भाग में आपको **उत्पादन प्रणाली** की अवधारणा के बारे में जानकारी दी गई है।

अंतिम भाग में हमने उत्पादन के चार तरीक़ों की विवेचना की है।

7.2 उत्पादन

मनुष्यों को जीवन निर्वाह हेतु भोजन, वस्त्र, शरण/आवास तथा अन्य जीवनोपयोगी आवश्यकताओं की ज़रूरत होती है। उन्हें ये सभी वस्तुएं प्रकृति से बनी बनाई दशा में नहीं मिल सकतीं। निर्वाह हेतु प्रकृति में प्राप्य वस्तुओं से वे इन भौतिक वस्तुओं का उत्पादन करते हैं। मानवीय अस्तित्व का आधार सदैव भौतिक उत्पादन रहा है तथा आज भी है।

7.2.1 मानवीय समाज का आधार: भौतिक उत्पादन

कार्ल मार्क्स के अनुसार, मानव समाजों का इतिहास इसी बात की कहानी है कि किस प्रकार आजीविका अर्जन के प्रयासों के संदर्भ में व्यक्ति परस्पर जुड़े होते हैं। उसने कहा कि, "प्रथम ऐतिहासिक क्रिया भौतिक वस्तुओं का उत्पादन है। वस्तुत: यह एक ऐतिहासिक क्रिया है, जो सारे इतिहास की एक मूलभूत दशा है।" (देखिए बॉटोमोर 1964: 60)। मार्क्स के अनुसार, आर्थिक उत्पादन अथवा भौतिक वस्तुओं का उत्पादन समाज का वह आरम्भ बिन्दु है, जहां से समाज एक अंतर्संबंधित समग्र के रूप में संरचित होता है। उसने आर्थिक कारकों तथा मानव के ऐतिहासिक विकास के अन्य पक्षों के मध्य परस्पर आदान-प्रदान के सम्बन्ध बताए। समाज में घटित होने वाले परिवर्तनों की व्याख्या में आर्थिक उत्पादन का कारक एक केंद्रीय अवधारणा

है। उसकी यह मान्यता है कि उत्पादन की शक्तियां उत्पादन के सम्बन्धों के साथ मिलकर प्रत्येक समाज के आर्थिक व सामाजिक इतिहास का आधार बनती हैं। अपनी पुस्तक, *ग्रुंडरिज़* (1857-58) की प्रस्तावना में मार्क्स ने कहा कि यद्यपि उत्पादन, वितरण व उपभोग की तीन प्रक्रियाएं एक ही नहीं हैं तो भी ये एक समष्टि का प्रतिनिधित्व करती हैं। ऐसा इसलिए है कि अपने आपको पूरा करके, इन तीनों में से प्रत्येक प्रक्रिया अन्य प्रक्रिया को जन्म देती है। इस प्रकार, एक प्रक्रिया दूसरी का माध्यम बनती है। उदाहरण के लिए एक बार उत्पादन पूर्ण होने पर वही तत्व उपभोग की वस्तु बन जाता है। इस तरह ही उत्पादन एवं वितरण की प्रक्रियाएं भी परस्पर जुड़ी हुई हैं। अत: इन आर्थिक संवर्गों (categories) में परस्पर सुनिश्चित सम्बन्ध होते हैं। मार्क्स के अनुसार, एक विशिष्ट प्रकार का उत्पादन, एक विशिष्ट प्रकार के वितरण, विनिमय एवं उपभोग को सृजित करता है। इन सभी आर्थिक संवर्गों के आधार पर उत्पादन के विशिष्ट प्रकार के सम्बन्ध निर्मित हो जाते हैं। मार्क्स का तर्क था कि उत्पादन अन्य आर्थिक संवर्गों पर आधारित है तथा उत्पादन व अन्य आर्थिक प्रक्रियाओं के बीच स्पष्ट सम्बन्ध नहीं हैं। लेकिन यह स्पष्ट है कि भौतिक उत्पादन मानवीय समाज का आधार है।

7.2.2 उत्पादन: सामान्य तथा ऐतिहासिक संवर्ग

मार्क्स के अनुसार, उत्पादन एक सामान्य व ऐतिहासिक संवर्ग (category) दोनों है। अपनी पुस्तक, *कैपीटल* (1861-1879) में, पूंजीवादी समाजों में उत्पादन के विशिष्ट स्वरूपों को दर्शाने के लिए मार्क्स ने उत्पादन को एक सामान्य संवर्ग के रूप में प्रयुक्त किया है। दूसरी ओर, विशिष्ट सामाजिक एवं ऐतिहासिक विशेषताओं वाले उत्पादन के बारे में चर्चा करते हुए मार्क्स ने उत्पादन प्रणाली की अवधारणा की विवेचना की है। इसके बारे में इस इकाई के अंतिम भाग में चर्चा की गई है।

यहाँ हमें यह याद रखने की आवश्यकता है कि मानव इतिहास में उत्पादन की भूमिका मार्क्स की कृतियों में "मार्गदर्शक सूत्र" बन जाती है। उसके विचारों को समझने के लिए आइए हम भी इस सूत्र का अनुसरण करें। आइए, हम उत्पादन की शक्तियों की चर्चा से प्रारंभ करें।

7.3 उत्पादन की शक्तियां

मानव जाति किस सीमा तक प्रकृति पर नियत्रंण करती है, इसकी अभिव्यक्ति उत्पादन की शक्तियां करती हैं। जितनी अधिक या कम उन्नत उत्पादन शक्तियां होंगी उतना ही अधिक या कम प्रकृति पर मानव का नियंत्रण होगा। इन उत्पादन की शक्तियों को भौतिक वस्तुओं के उत्पादन में प्रयुक्त भौतिक तरीक़ों के रूप में समझा जा सकता है। इसके अंतर्गत तकनीकी जानकारी, उत्पादन की प्रक्रिया में प्रयुक्त उपकरण या उत्पाद आदि आते हैं। उदाहरण के लिए, उपकरण, मशीनें, श्रम तथा प्रौद्योगिकी के स्तर आदि सभी उत्पादन की शक्तियां कहलाती हैं।

7.3.1 उत्पादन शक्तियाँ: उत्पादन के साधन व श्रम शक्ति

मार्क्स के अनुसार, उत्पादन की शक्तियों में उत्पादन के साधन व श्रम शक्ति शामिल हैं। उत्पादन की शक्तियों के अंतर्गत मशीनों का विकास, श्रम प्रक्रिया में परिवर्तन, ऊर्जा के नए स्रोतों की खोज तथा श्रमिकों की शिक्षा आदि आते हैं। इस अर्थ में, विज्ञान व उससे जुड़े कौशल को उत्पादक शक्तियों के अंग के रूप में देखा जा सकता है। कुछ मार्क्सवादियों ने तो भौगोलिक या पारिस्थितिक भू-भाग तक को भी उत्पादन शक्ति के रूप में शामिल कर लिया है।

प्रौद्योगिकी, जनांकिकी, पारिस्थितिकी अथवा "भौतिक जीवन" में अनचाहे परिवर्तन स्वयं उत्पादन प्रणाली को प्रभावित करते हैं और उत्पादन सम्बन्धों के सन्तुलन को भी काफ़ी सीमा तक

परिवर्तित करते हैं। परन्तु अनचाहे परिवर्तन, उत्पादन प्रणाली को अनायास ही पुनर्गठित नहीं करते। शक्ति के सम्बन्धों, प्रभुत्व के स्वरूपों और सामाजिक संगठनों के स्वरूपों का कोई भी पुनर्गठन प्रायः संघर्ष का परिणाम होता है। भौतिक जीवन में परिवर्तन से संघर्ष की दशाएं एवं प्रकृति निर्धारित होती हैं।

7.3.2 उत्पादन की भौतिक शक्तियों में परिवर्तन

प्रत्येक सामाजिक व्यवस्था में उत्पादन की भौतिक शक्तियों में निरंतर परिवर्तन होता रहता है। कभी-कभी यह परिवर्तन कुछ प्राकृतिक तथा पारिस्थितिक प्रघटनाओं के कारण भी होता है। जैसा कि जनजातीय समाजों में देखा गया हैं। ऐसा परिवर्तन प्रायः नदियों के सूखने, निर्वनीकरण अथवा भूमि क्षरण जैसी प्रघटनाओं के कारण होता है। बहुधा यह परिवर्तन प्रायः उत्पादन के उपकरणों में विकास के फलस्वरूप होता है। मानव ने अपने जीवन को बेहतर बनाने तथा अभावों की पूर्ति के सदैव प्रयास किए है। मनुष्य ने अपने श्रम द्वारा प्रकृति पर विजय पाई है तथा इस निरंतर संघर्ष से उत्पादन की शक्तियां विकसित हुई हैं।

इस प्रक्रिया में उत्पादन की शक्तियों का विकास प्रमुख होता है और यह बहिर्जन्य (exogenous) कारक द्वारा प्रभावित होता है। इस कारक का अभिप्राय उस प्रेरक शक्ति से है जो कि उत्पादन की शक्तियों और सम्बन्धों से बाहर होती है व उत्पादन की शक्तियों पर प्रभाव डालती है। प्रेरक शक्ति मनुष्य की तर्कसंगत तथा शाश्वत मानसिक प्रेरणा है। इसके द्वारा मनुष्य उत्पादक शक्तियों का विकास करके कमियों पर काबू पाने और अपनी स्थिति को बेहतर बनाने की कोशिश करते हैं। मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो समाज में उत्पादन में रत है। अपने श्रम द्वारा प्रकृति पर विजय पाकर मनुष्य ने उत्पादन किया है।

7.3.3 उत्पादन शक्तियों की प्रकृति

उत्पादन शक्तियां प्रकृति को उपयोगी मूल्यों और विनिमय मूल्यों में परिवर्तित कर देती हैं। उत्पादन शक्तियां मनुष्य के मध्य उत्पादक सम्बन्धों की क्रमिक व्यवस्थाओं के विनाश और सृजन को बाध्य करती हैं। उत्पादन शक्तियों की प्रकृति विकासशील होती है और वे प्रकृति पर मनुष्य की विजय और ज्ञान में वृद्धि के साथ-साथ विकसित होती हैं। जहां-जहां ये शक्तियां विकसित होती हैं, नए **उत्पादन के सम्बन्ध** विकसित होते हैं और विकास के एक बिन्दु पर पहुंच कर उत्पादन शक्तियों और उत्पादन सम्बन्धों के मध्य संघर्ष होता है, क्योंकि उत्पादन सम्बन्ध अब नई उत्पादन शक्तियों से सामंजस्य नहीं रख पाते। ऐसी स्थिति में समाज क्रांति के युग में प्रविष्ट करता है। मनुष्य में वर्ग-संघर्ष की स्थिति को पहचानते हुए इस क्रांति के प्रति जागरूकता होती है। वर्ग-संघर्ष पुरातन व्यवस्था के संरक्षकों तथा नई आर्थिक संरचना के अगुआओं के बीच होता है।

उत्पादन के विभिन्न सामाजिक व आर्थिक संगठन समाज की उत्पादक क्षमता के विकास में योगदान देते हैं अथवा उसे हतोत्साहित करते हैं और उसी के अनुसार ये संगठन उदित अथवा नष्ट हो जाते हैं। ये संगठन मानव इतिहास की विशिष्टता रहे हैं। इस प्रकार उत्पादन शक्तियों का विकास मानवीय इतिहास की सामान्य प्रक्रिया की व्याख्या करता है। हमने पहले ही बताया है उत्पादन शक्तियों में सिर्फ़ उत्पादन के साधन (उपकरण, मशीनें, फैक्ट्रियां आदि) ही नहीं होते, अपितु कार्य में प्रयुक्त श्रमशक्ति, कौशल, ज्ञान, अनुभव तथा अन्य मानवीय योग्यताएं भी शामिल होती हैं। भौतिक उत्पादन की प्रक्रिया में समाज के पास जो शक्तियां होती हैं, ये उत्पादन शक्तियां उनको अभिव्यक्त करती हैं।

कोष्ठक 7.1: श्रमशक्ति

मार्क्स के अनुसार श्रमशक्ति उपयोगी कार्य करने की एक ऐसी क्षमता है जो उत्पादों के मूल्य को बढ़ा देती है। श्रमिक अपनी श्रमशक्ति अर्थात् कार्य करने की क्षमता को बेचते हैं जिससे वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि होती है। वे नक़द वेतन के बदले में पूंजीपतियों को अपनी श्रमशक्ति बेचते हैं।

हमें श्रमशक्ति और श्रम में अंतर को समझना चाहिए। श्रम अपनी शक्ति लगाने की वह प्रक्रिया है जिससे वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि होती है। जबकि श्रमशक्ति किसी भी वस्तु में अतिरिक्त मूल्य (surplus value) बढ़ाने का साधन है। **पूंजीपति** कच्चे माल को खरीदने के लिए पूंजी निवेश करते हैं तथा बाद में उत्पादित वस्तुओं को अधिक क़ीमत पर बेच देते हैं। यह तभी संभव है जब वस्तु के मूल्य में वृद्धि हो। मार्क्स के अनुसार, श्रमशक्ति वह क्षमता है जिसके जुड़ने से वस्तुओं का मूल्य बढ़ जाता है। पूंजीपति श्रमशक्ति को ख़रीदने व उपयोग करके श्रमिक से श्रम हथियाने में सफल होता है। वस्तु के अतिरिक्त मूल्य का स्रोत है यही श्रम।

मार्क्स के अनुसार पूंजीवादी उत्पादन व्यवस्था में अतिरिक्त उत्पादन मूल्य का स्रोत एक विशिष्ट प्रक्रिया है। यह ऐसी प्रक्रिया है जिसमें श्रमिक अपने श्रम द्वारा वस्तुओं के मूल्य में अधिक वृद्धि करता है। लेकिन वृद्धि की तुलना में पूंजीपति श्रमशक्ति का कम मूल्य देते हैं।

बोध प्रश्न 1

i) निम्न में से किसको उत्पादन की शक्ति नहीं माना जा सकता ?

अ) ट्रैक्टर ब) श्रमशक्ति

स) भाप का इंजन द) पवन चक्की

इ) कंप्यूटर फ) मिसाइल

ii) सही उत्तर पर निशान लगाइए।

उत्पादन शक्तियों की वृद्धि के साथ-साथ

अ) प्रकृति पर मनुष्य की विजय बढ़ती है।

ब) मानवजाति प्रकृति का दास बन जाती है।

स) मानवजाति प्रकृति के प्रति अधिक जागरूक हो जाती है।

द) मानवजाति प्रकृति का संरक्षक बन जाती है।

iii) सही उत्तर पर निशान लगाइए।

उत्पादन की भौतिक शक्तियां

अ) कुछ हद तक स्थिर हैं।

ब) निरंतर प्रगतिशील हैं।

स) अभाव की ओर जा रही हैं।

द) विनाश की संभावना रखती हैं।

7.4 उत्पादन के संबंध

भौतिक उत्पादन में उत्पादन की शक्तियां ही एकमात्र कारक नहीं होतीं। समाज में लोगों के लिए एक साथ संगठित होकर ही उत्पादन करना संभव है। इस अर्थ में श्रम सदैव सामाजिक होता है। मार्क्स के अनुसार, समाज के सदस्यों में उत्पादन करने के उद्देश्य से परस्पर सुनिश्चित

सम्बन्ध पैदा हो जाते हैं। इन सामाजिक सम्बन्धों के अंतर्गत ही उत्पादन किया जाता है। यह आसानी से कहा जा सकता है कि उत्पादन के सम्बन्ध उत्पादन की प्रक्रिया में जुटे लोगों के मध्य सामाजिक सम्बन्ध हैं। ये सामाजिक सम्बन्ध उत्पादन शक्तियों के विकास के स्तर एवं प्रकृति द्वारा निर्धारित होते हैं।

7.4.1 उत्पादन शक्तियों एवं संबंध में जुड़ाव

उत्पादन की 'शक्तियां' एवं 'सम्बन्ध' सशक्त रूप से परस्पर जुड़े होते हैं। इनमें से किसी भी एक का विकास दूसरे में विरोधाभास अथवा असामंजस्य पैदा कर देता है। वस्तुत: उत्पादन के इन दोनों पक्षों के मध्य विरोधाभास 'इतिहास का संचालक तत्व' होता है (बॉटोमोर 1983: 178)। ऐतिहासिक विकास में प्रभावों की श्रृंखला इसी प्रकार चलती है। उत्पादन की शक्तियां उत्पादन के सम्बन्धों को निर्धारित करती हैं। तथापि इस बात को लेकर काफी विवाद है कि उत्पादन की शक्तियों का उत्पादन के सम्बन्धों पर प्रभुत्व होता है। जैसा कि हमने पहले बताया है कि यहां मार्क्स के विचारों की इन विभिन्न व्याख्याओं की चर्चा विस्तार से नहीं की जाएगी। मार्क्स की स्वयं की कृतियों में इस मुद्दे पर अस्पष्टता है। कहीं वह उत्पादन के सम्बन्धों को प्राथमिक बताता है तो कहीं पर वह उत्पादन की शक्तियों को सामाजिक परिवर्तन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बताता है।

7.4.2 उत्पादन संबंधों के प्रकार

उत्पादन के सम्बन्ध किसी भी समाज के उत्पादन के स्तर के साथ-साथ चलते हैं और उत्पादन की प्रक्रिया में उत्पादक शक्तियों तथा मनुष्य को जोड़ते हैं। ये सम्बन्ध दो प्रकार के होते हैं। पहले सम्बन्ध तकनीकी सम्बन्ध होते हैं, जो कि वास्तविक उत्पादन प्रक्रिया के लिए आवश्यक होते हैं। दूसरे सम्बन्ध, आर्थिक नियंत्रण के सम्बन्ध होते हैं जो कि सम्पत्ति के स्वामित्व में वैधानिक रूप से अभिव्यक्त होते हैं। ये उत्पादन की शक्ति और उत्पादों तक मनुष्य की पहुंच को नियंत्रित करते हैं।

7.4.3 उत्पादन संबंधों की प्रकृति

उत्पादन के सम्बन्ध सामाजिक सम्बन्ध होते हैं। इस प्रकार इनके अंतर्गत कामगारों अथवा प्रत्यक्ष उत्पादकों और उनके नियोक्ताओं (employers) अथवा श्रम के नियंत्रकों के परस्पर सम्बन्ध तथा प्रत्यक्ष उत्पादकों के परस्पर सम्बन्ध शामिल हैं।

उत्पादन के सम्बन्ध उत्पादन के साधनों का स्वामित्व मात्र नहीं होते। नियोक्ता का कामगार से सम्बन्ध प्रभुत्व का होता है। जबकि कामगार का अपने सहयोगी कामगार के साथ सम्बन्ध सहकारिता का होता है। उत्पादन के सम्बन्ध व्यक्तियों के मध्य संबंध होते हैं। जबकि उत्पादन के साधन (means of production) व्यक्तियों और वस्तुओं के मध्य सम्बन्ध होते हैं। उत्पादन के सम्बन्ध उत्पादक शक्तियों के विकास की दिशा और गति को प्रभावित कर सकते हैं।

उत्पादन के सम्बन्ध उत्पादक शक्तियों के आर्थिक स्वामित्व में प्रतिबिम्बित होते हैं। उदाहरण के लिए, पूंजीवाद के अंतर्गत इन सम्बन्धों में सबसे अधिक मूलभूत बात उत्पादन के साधनों का पूंजीपतियों द्वारा स्वामित्व है, जबकि सर्वहारा वर्ग सिर्फ श्रमशक्ति का मालिक होता है।

7.4.4 उत्पादन संबंधों से उत्पादन शक्ति में बदलाव

उत्पादन के सम्बन्धों से उत्पादन की शक्तियों में परिवर्तन लाए जा सकते हैं तथा ये सम्बन्ध शक्तियों पर प्रभुत्व भी स्थापित कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, पूंजीवादी उत्पादन के सम्बन्ध प्राय: श्रम प्रक्रिया तथा उत्पादन के उपकरणों में क्रांति सी ला देते हैं।

सोचिए और करिए 1

भारत में औद्योगीकरण की प्रक्रिया के संदर्भ में उत्पादन के सम्बन्धों तथा उत्पादन की शक्तियों की संक्षेप में व्याख्या कीजिए। इसे लिखने से पहले अपने केन्द्र में सलाहकार तथा अन्य विद्यार्थियों से इस विषय पर चर्चा कीजिए।

विकास की एक निश्चित अवस्था पर समाज की उत्पादक शक्तियां विद्यमान उत्पादन सम्बन्धों के साथ टकराव की स्थिति में आती हैं। उत्पादन की शक्ति और सम्बन्धों के मध्य विरोधाभास के कारण ही इतिहास उत्पादन के तरीक़ों का एक क्रमिक स्वरूप होता है। इस विरोधाभास के कारण ही उत्पादन प्रणाली का आवश्यक ह्रास होता है तथा इसका स्थान दूसरी प्रणाली ले लेती है। किसी भी उत्पादन प्रणाली में उत्पादन की शक्तियां और सम्बन्ध न केवल आर्थिक प्रगति निर्धारित करते हैं अपितु सम्पूर्ण समाज को एक अवस्था से दूसरी अवस्था की ओर ले जाते हैं। आइए हम भाग 7.5 में मार्क्स द्वारा दी गई उत्पादन प्रणाली की अवधारणा पर चर्चा करें। परंतु अगले भाग पर जाने से पहले बोध प्रश्न 2 पूरा करें।

बोध प्रश्न 2

i) सही उत्तर पर निशान लगाइए।

उत्पादन के सम्बन्ध प्राथमिक रूप से निम्न से किस आधार पर बने होते हैं?

अ) समाज में अर्जन के लिए वैयक्तिक प्रेरणा शक्ति

ब) बाज़ार में वस्तुओं के असंतुलित विनिमय

स) इतिहास में मनुष्यों की आदर्श भौतिक आवश्यकता

द) समाज में वर्गों की विभेदीकृत आवश्यकताओं

इ) उत्पादन में प्रक्रिया से उभरने वाले सामाजिक सम्बन्ध

ii) सही उत्तर पर निशान लगाइए।

उत्पादन के सम्बन्ध निम्न से किसके के मध्य सम्बन्ध होते हैं?

अ) वस्तुओं के मध्य

ब) मनुष्यों व वस्तुओं के मध्य

स) मनुष्यों के मध्य

द) उपरोक्त में से किसी के भी नहीं

iii) निम्न में से कौन-सा कथन सही है ?

अ) उत्पादन के सम्बन्ध उत्पादन के साधनों के स्वामित्व के सम्बन्ध मात्र नहीं है।

ब) उत्पादन के सम्बन्ध मानवीय संबंध हैं ही नहीं।

स) उत्पादन के सम्बन्ध व्यक्तियों के मध्य सहकारी सम्बन्ध नहीं हैं।

द) उत्पादन के सम्बन्ध अनिवार्यत: उत्पादकों के मध्य एक शोषक सम्बन्ध हैं।

iv) निम्न में से कौन-सा कथन **ग़लत** है ?

अ) उत्पादन के सम्बन्ध प्रभुत्व स्थापित कर सकते हैं तथा उत्पादन की शक्तियों में परिवर्तन भी ला सकते हैं।

ब) उत्पादन के सम्बन्ध अनिवार्यत: उत्पादन की शक्तियों से सम्बन्धित नहीं होते।

स) उत्पादन के सम्बन्ध उत्पादन की शक्तियों के साथ संघर्षरत हो सकते हैं।

द) उत्पादन के सम्बन्ध उत्पादन की शक्तियों में परिवर्तन ला सकते हैं।

7.5 उत्पादन प्रणाली

मार्क्स के अनुसार, सामाजिक इतिहास की अवस्थाएं इस बात से फ़र्क नहीं होतीं कि मनुष्य ने क्या उत्पादित किया है, अपितु इससे फ़र्क होती हैं कि उन्होंने जीवन निर्वाह हेतु भौतिक वस्तुओं का उत्पादन कैसे अथवा किन साधनों द्वारा किया है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि ऐतिहासिक अवस्थाएं भौतिक उत्पादन प्रणाली के मूल सिद्धांत पर आधारित एवं विभेदीकृत होती हैं। दूसरे शब्दों में भौतिक उत्पादन की क्रमिक प्रणाली इतिहास का आधार है। यह भी कहा जा सकता है कि उत्पादन के सम्बन्ध व शक्तियां उत्पादन प्रणाली के दो पक्ष हैं। समाज की उत्पादक शक्तियां प्रकृति पर मानव के नियंत्रण की मात्रा को दर्शाती हैं। उत्पादक शक्तियां जितनी अधिक विकसित होती हैं, उतना ही प्रकृति पर उनका नियंत्रण अधिक होता है। उत्पादन करने के लिए, समाज के सदस्य परस्पर सुनिश्चित सम्बन्धों में बंध जाते हैं। भौतिक वस्तुओं का उत्पादन कैसे होता है, इसी पर उत्पादन के सम्बन्ध आधारित हैं। इन्हीं सामाजिक सम्बन्धों के अंतर्गत उत्पादन होता है। यह कहा जा सकता है कि इतिहास में किसी भी उत्पादन प्रणाली में उत्पादन की शक्तियां तथा उत्पादन के सम्बन्ध अनिवार्य भाग लेते हैं। यह भी कहा जा सकता है कि उत्पादन की शक्तियां, उत्पादन के सम्बन्धों को निर्धारित करती हैं व दोनों मिलकर उत्पादन प्रणाली को परिभाषित करते हैं। उत्पादन प्रणाली वे सामान्य आर्थिक संस्थाएं हैं अथवा वे विशिष्ट तरीके हैं जिनके अंतर्गत समाज के सदस्य जीवन निर्वाह के साधनों का उत्पादन व वितरण करते हैं। इस अर्थ में, उत्पादन की क्रमिक प्रणाली इतिहास के व्यवस्थित विवरण के आधारभूत तत्व हैं।

7.5.1 उत्पादन प्रणाली परिभाषा में निर्णायक तत्त्व: अतिरिक्त उत्पादन

उत्पादन प्रणाली के परिभाषा सम्बन्धी मार्क्सवादी विवाद को अलग करके, यह कहा जा सकता है कि उत्पादन प्रणाली की परिभाषा में निर्णायक तत्व यह है कि अतिरिक्त उत्पादन (surplus production) कैसे होता है तथा उसके उपभोग को किस तरह नियंत्रित किया जाता है (बॉटोमोर 1983: 337)। अतिरिक्त उत्पादन का तात्पर्य यहां उस शेष भाग से है, जो कि आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद बचा रहता है। मार्क्स के अनुसार, **पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली** के अंतर्गत अतिरिक्त उत्पादन लाभ का रूप ग्रहण कर लेता है। अतिरिक्त उत्पादन को श्रमिक वर्ग के शोषण द्वारा उत्पादित किया जाता है तथा इसकी बिक्री श्रमिकों के पारिश्रमिक से ऊंची कीमत पर की जाती है। चूंकि अतिरिक्त उत्पादन समाजों को विकसित होने व बढ़ने के योग्य बनाता है इसलिए इस कारक को उत्पादन प्रणाली की परिभाषा में सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है।

7.5.2 उत्पादन प्रणाली में विशिष्ट उत्पादन संबंध

प्रत्येक उत्पादन प्रणाली में विशिष्ट उत्पादन सम्बन्ध होते हैं। ये सम्बन्ध अकस्मात् अथवा स्वाभाविक ही विकसित नहीं हो जाते। सम्पन्न वर्ग अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इन सम्बन्धों को व्यवस्थित रखता है ताकि वह कामगारों से अतिरिक्त उत्पादन प्राप्त कर सके। आइए एक उदाहरण लें। सामन्तवाद के अंतर्गत उत्पादन सम्बन्धों में सामन्तों का कृषक मज़दूरों पर प्रभुत्व बना रहता है। इस तरह वे कृषकों द्वारा पैदा किए अतिरिक्त उत्पादन को हथिया सकते हैं। परन्तु उपरोक्त उत्पादन सम्बन्ध पूंजीवादी व्यवस्था में असफल रहेंगे। अत: पूंजीवाद में अलग प्रकार के उत्पादन सम्बन्ध विकसित हो जाते हैं तथा इन में पूंजीपति श्रमिकों से अतिरिक्त उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं।

7.5.3 उत्पादन प्रणाली की उत्पादन शक्तियों में बदलाव

यहां पर यह समझना आवश्यक है कि उत्पादन शक्तियां तथा उत्पादन सम्बन्ध निश्चित और

स्थायी नहीं होते हैं। किसी भी उत्पादन प्रणाली की उत्पादन शक्तियों में परिवर्तन हो सकता है। प्रत्येक समाज में समय के साथ-साथ तकनीकी प्रगति होती रहती है तथा उत्पादन में वृद्धि होती है। आज के पूंजीवादी राष्ट्र लगभग दो सौ से तीन सौ वर्ष पूर्व पूंजीवाद के उद्भव के समय बहुत भिन्न थे। उत्पादन शक्तियों में परिवर्तन होने से ही उत्पादन सम्बन्धों में परिवर्तन हुए हैं। आज के **श्रमिक अथवा कामगारों** का शोषण पहले के श्रमिकों के शोषण की तुलना में कम माना जा सकता है तथापि मार्क्सवादियों की मान्यता है कि अब भी श्रमिकों का शोषण जारी है। इस मान्यता का आधार यह है कि आधुनिक श्रमिक नई तकनीक द्वारा अपने पूर्ववर्ती श्रमिकों की तुलना में अधिक उत्पादन करते हैं लेकिन वे उसी के अनुरूप अधिक वेतन नहीं पाते हैं।

बोध प्रश्न 3

निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तरों पर निशान लगाइए।

i) मार्क्स के अनुसार, उत्पादन प्रणाली को निम्न में से क्या कहा जा सकता है?
   - अ) एक आनुभाविक अवधारणा (concept)
   - ब) एक मनोवैज्ञानिक प्रघटना (phenomenon)
   - स) एक प्राणीशास्त्रीय तथ्य (fact)
   - द) एक आर्थिक परिवृत्य (variable)
   - इ) एक अमूर्त संयोजन (construct)

ii) निम्न में से किसको सही रूप से उत्पादन प्रणाली कहा जा सकता है?
   - अ) पशुपालन सम्बन्धी
   - ब) कृषि सम्बन्धी
   - स) सामन्तवादी
   - द) जनजातीय
   - इ) राष्ट्रीय

7.6 उत्पादन प्रणाली के विभिन्न स्वरूप

किसी भी विशिष्ट समाज में एक नियत बिन्दु पर एक से अधिक उत्पादन प्रणाली प्रचलित हो सकती है। परन्तु समाज के सभी स्वरूपों में उत्पादन का एक निर्धारक प्रकार होता है, जो अन्य सभी को प्रस्थिति एवं प्रभाव प्रदान करता है। मार्क्स द्वारा मानवीय समाजों के अध्ययन के दौरान बताए गए उत्पादन प्रणाली के चार स्वरूपों की यहां चर्चा की जाएगी।

7.6.1 एशियाटिक उत्पादन प्रणाली

एशियाटिक उत्पादन प्रणाली की अवधारणा उत्पादन के एक विशिष्ट मौलिक तरीके वाली है। यह प्राचीन दास उत्पादन प्रणाली एवं **सामन्तवादी उत्पादन प्रणाली** से भिन्न है। एशियाटिक उत्पादन प्रणाली आदिम समुदायों की विशेषता है, जिसमें भूमि का स्वामित्व सामुदायिक होता है। ये समुदाय आंशिक रूप से नातेदारी सम्बन्धों पर आधारित होते हैं। इन समुदायों की वास्तविक अथवा काल्पनिक एकता की अभिव्यक्ति राज्य शक्ति करती है और यह राज्य शक्ति आवश्यक आर्थिक संसाधनों के प्रयोग को नियंत्रित करती है तथा समुदाय के उत्पादन व श्रम के कुछ हिस्से का प्रत्यक्ष उपभोग करती है। उत्पादन की यह प्रणाली वर्ग-विहीन समाज से वर्ग आधारित समाजों में परिवर्तन का एक संभाव्य है और शायद इस परिवर्तन का यह प्राचीनतम स्वरूप है। इसमें इस परिवर्तन के विरोधाभास निहित होते हैं। अर्थात् इसमें उत्पादन के सामुदायिक सम्बन्धों के साथ राज्य तथा शोषण करने वाले वर्ग के उभरते स्वरूपों का सम्मिश्रण मिलता है।

मार्क्स ने भारत के इतिहास के बारे में कोई व्यवस्थित प्रस्तुति नहीं दी है। उसने तत्कालीन भारतीय प्रश्नों पर अपने विचार अवश्य दिए। ये प्रश्न वे थे, जिन्होंने जनता का ध्यान आकृष्ट कर रखा था। कभी-कभी उसने अपने सामान्य तर्कों को स्पष्ट करने के लिए भारत की विगत तथा वर्तमान दशाओं से उदाहरण भी लिए। परंतु भारतीय समाज और इतिहास की व्याख्या करने के लिए एशियाटिक उत्पादन प्रणाली की अवधारणा अनुपयुक्त है।

कोष्ठक 7.2: मार्क्स तथा भारतीय समाज

मार्क्स ने भारतीय समाज का गहन अध्ययन नहीं किया है। उसके अनुसार हिन्दुत्व की विचारधारा एक पुरातन समाज की विचारधारा थी। उसे प्राचीन काल के हिन्दू स्वर्ण-युग के बारे में संदेह थे। मार्क्स के अनुसार भारत में ब्रिटिश शासन भी एशियाटिक शोषण व्यवस्था का विस्तार ही था।

7.6.2 प्राचीन उत्पादन प्रणाली

प्राचीन उत्पादन प्रणाली पूंजीवाद से पूर्व की उत्पादन प्रणालियों में से एक है। इस उत्पादन व्यवस्था का आधार दास प्रथा थी। **दास** का मालिक से सम्बन्ध दास प्रथा का मूल सार माना जाता है। इस उत्पादन प्रणाली में मालिक का दासों पर स्वामित्व का अधिकार होता है तथा वह दास श्रम द्वारा उत्पादित वस्तुओं का उपभोग करता है।

अपनी चर्चा को कृषि से जुड़ी दासता (देखिए कोष्ठक 7.3) तक सीमित रखते हुए देखें तो हमें पता चलता है कि शोषण इस प्रकार से होता है कि दास मालिक की भूमि पर कार्य करता है तो बदले में उसे निर्वाह मिलता है। दास द्वारा किए गए उत्पादन और उपभोग में जो अंतर होता है वही मालिक का लाभ बन जाता है। परन्तु यह प्राय: भुला दिया जाता है कि इसके परे दास को अपने स्वयं के जनन से वंचित रखा जाता है। किसी भी समाज में दासता का जनन (reproduction) इस बात पर निर्भर करता है कि उस समाज में नए दास प्राप्त करने की उस समाज की क्या क्षमता है। यहां संचय (accumulation) की दर इस बात पर निर्भर करती है कि कितने लोग दास बने हैं न कि दासों की उत्पादकता पर।

समुदाय के अन्य सदस्यों से दास भिन्न होते हैं क्योंकि उन्हें अपनी सन्तान पैदा करने के अधिकार से वंचित रखा जाता है। समाज में "विदेशी" के रूप में उनकी प्रस्थिति स्थायी हो जाती है। "विदेशी" से लाभ कमाया जाता है। इस व्यवस्था को सावयवी (organic) तथा निरंतर चलने वाली बनाने के लिए ज़रूरी है कि दासों के अपने आश्रित न हों। प्रत्येक पीढ़ी में पुराने बूढ़े हुए दासों के स्थान पर नए विदेशियों को दास के रूप में लाने के साधन होने चाहिए। इस शोषण के इन दो स्तरों में एक अनिवार्य और गहन संबंध है। यह है कि एक समुदाय से दूसरे समुदाय में व्यक्ति चुराने का संबंध, और दास वर्ग तथा दासों के मालिक वर्गों के बीच शोषण का संबंध।

दास प्रथा में श्रमशक्ति की वृद्धि वास्तविक जनांकिकीय शक्तियों से मुक्त होती है। यह प्राकृतिक वृद्धि पर आधारित जनांकिकीय वृद्धि पर निर्भर नहीं करती, अपितु विदेशी व्यक्तियों को पकड़ कर लाने के साधनों पर निर्भर करती है। संचय की संभावना दासों की वृद्धि से होती है, जो कि श्रम की उत्पादकता में वृद्धि से मुक्त होती है। शोषण का यह तरीक़ा समाज को जनांकिकीय हेर-फेर करने की अनुमति देता है। साथ ही साथ जन्म दर में परिवर्तन, आयु में हेर-फेर, तथा जीवन अवधि और विशेषत: सक्रिय जीवन अवधि में हेर-फेर भी इस तरीक़े से संभव होता है।

किसी भी दास उत्पादन प्रणाली के प्रभुत्व की परख दासों की संख्या में नहीं होती, अपितु उस सीमा में होती है, जिस सीमा तक अभिजन (elite) वर्ग अपनी दौलत पाने के लिए दासों पर निर्भर होते हैं।

कोष्ठक 7.3: कृषि से जुड़ी दासता

मार्क्स ने जिस दासवादी उत्पादन प्रणाली के बारे में बताया है वह रोम साम्राज्य के दौरान इटली में प्रचलित थी। 200 ईस्वी के आसपास इस साम्राज्य में पश्चिमी एशिया, मिस्र से मोरक्को तक सारा उत्तरी अफ्रीका तथा ब्रिटेन सहित यूरोप के अधिकतर भाग शामिल थे। इसका क्षेत्र दस लाख पच्चत्तर हज़ार वर्ग मील था और जनसंख्या छः करोड़ के लगभग थी। इतने बड़े साम्राज्य में विभिन्न उत्पादन प्रणालियों वाले समाजों का होना स्वाभाविक था। कृषि के क्षेत्र में दास प्रथा ने इटली में ऐसा स्वरूप धारण कर लिया था जैसा कि पहले कभी नहीं हुआ था। कुछ अन्य नगर राज्यों जैसे ऐथेंस में भी दास प्रथा ही प्रमुख उत्पादन प्रणाली थी। इन राज्यों में शासक वर्ग दास श्रम से सम्पदा अर्जित करता था। रोमन साम्राज्य के पश्चिमी भाग में प्राचीन उत्पादन प्रणाली का स्थान सामन्तवादी उत्पादन प्रणाली ने ले लिया था।

7.6.3 सामन्तवादी उत्पादन प्रणाली

मार्क्स तथा एंजल्स की प्राथमिक रूप से पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली की परिभाषा में रुचि थी। सामन्तवाद पर उनकी कृतियां दोनों की इस रुचि को दर्शाती हैं। साथ ही साथ उनकी कृतियों में सामन्तवाद से पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली में परिवर्तन पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। सामंतवादी व्यवस्था में श्रम का प्रचलित रूप क्या था और श्रम के उत्पादकों का उपभोग कैसे किया जाता था इस बारे में भी वे चिंतन कर रहे थे। दोनों ने पाया कि **सामंती भूपति** कृषक मज़दूरों का ठीक उसी प्रकार शोषण किया करते थे जिस प्रकार पूंजीपति अपने श्रमिकों अथवा "सर्वहारा" को शोषित करते हैं। पूंजीपति अतिरिक्त मूल्य कमाते हैं और सामन्तवादी भूपति अपने भूमिहीन कृषकों से भूमि का किराया वसूलते थे।

सोचिए और करिए 2

क्या यह सही है कि भारत के कुछ भागों के कृषक समाज में सामन्तवादी भूपतियों का प्रभुत्व रहा है? यदि हां तो दो पृष्ठों में विवरण दीजिए कि किस प्रकार सामंतवादी युग में कृषि का अधिकार होते हुए भी किसानों को अपने सम्पति के अधिकार से वंचित रहना पड़ा। क्या किसानों से यह अपेक्षा की जाती थी कि वे अपना श्रम अथवा श्रम के उत्पादों को सामन्तवादी भूपतियों को दें? अपने उत्तर की अपने अध्ययन केन्द्र के अन्य विद्यार्थियों के उत्तरों से तुलना कीजिए।

सामन्तवादी व्यवस्था में **भूमिहीन किसान** वैधानिक रूप से स्वतंत्र नहीं होने के कारण सम्पति के अधिकार से वंचित थे। हाँ, वे भूमिपति की सम्पति का प्रयोग कर सकते थे। वे अपने श्रम अथवा श्रम के उत्पादों को भूपतियों के हाथ देने को मजबूर थे ताकि परिवार का निर्वाह कर सकें और एक किसान की सरल घरेलू अर्थव्यवस्था को चला सकें।

सामन्तवादी समाज को मार्क्स तथा एंजल्स ने प्राचीन विश्व के दास समाज तथा आधुनिक युग के पूंजीपतियों एवं सर्वहाराओं के मध्य एक कड़ी जोड़ने वाली अवस्था माना। सामन्तवादी व्यवस्था के उद्विकास के कारण विनिमय का विकास हुआ है। इसने पूंजीवादी उत्पादन के सम्बन्धों की नींव डाली, जो कि बाद में सामंतवादी व्यवस्था का मुख्य विरोधाभास बन गये और जिनके कारण सामन्तवादी व्यवस्था का अंत हो गया। इस परिवर्तन की प्रक्रिया ने अनेक किसानों को भूमि से खदेड़कर मेहनतकश मज़दूर बनने के लिए मजबूर कर दिया। इस तरह पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली का प्रारंभ हुआ।

7.6.4 पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली

पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली में उत्पादन के साधन के रूप में पूंजी महत्वपूर्ण होती है। पूंजी के अनेक स्वरूप हो सकते हैं। यह धन के स्वरूप के रूप में हो सकती है अथवा श्रमशक्ति एवं उत्पादन के लिए कच्चे माल के क्रय के लिए ऋण के रूप में हो सकती है। यह भौतिक मशीनरी को ख़रीदने के लिए धन अथवा ऋण की आवश्यकता भी हो सकती है। पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली में पूंजी के विभिन्न स्वरूपों का निजी स्वामित्व पूंजीपति या बुर्जुआ वर्ग के हाथ में होता है। पूंजीपतियों का स्वामित्व इस प्रकार का होता है कि आम जनता का उस स्वामित्व में कोई हिस्सा नहीं होता। इसे पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली की मुख्य विशेषता माना जा सकता है।

पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली की निम्न विशेषताएं होती हैं (देखिए बॉटोमोर 1983:64)।

अ) वस्तुएं प्रयोग के लिए नहीं अपितु विक्रय के लिए उत्पादित की जाती हैं।

ब) श्रमशक्ति अथवा उपयोगी कार्य करने की क्षमता को बाज़ार में बेचा व खरीदा जाता है। किसी विशेष समय अथवा अवधि के लिए (समय दर) अथवा किसी विशिष्ट कार्य के लिए (नग दर) श्रमशक्ति का नगद वेतन के बदले में विनिमय किया जाता है। प्राचीन उत्पादन प्रणाली में श्रमिक अपना श्रम देने के लिए बाध्य होते थे। इसके विपरीत, पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली में श्रमिक अपने नियोक्ता से एक अनुबंध (contract) करता है।

स) विनिमय के माध्यम से धन का उपयोग किया जाता है। इस प्रक्रिया में बैंकों तथा वित्तीय माध्यमिक संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

द) उत्पादन प्रक्रिया पूंजीपति अथवा उसके प्रबन्धक द्वारा नियंत्रित होती है।

इ) वित्तीय निर्णय पूंजीपति उद्यमी द्वारा नियंत्रित होते हैं।

फ) पूंजीपति व्यक्तिगत रूप से श्रम एवं वित्त नियंत्रण के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं।

उत्पादन प्रणाली के रूप में पूंजीवाद सबसे पहले यूरोप में उभरा। पश्चिमी यूरोप में सामन्तवाद से पूंजीवाद में परिवर्तन के विषय में खंड 1 की इकाई 1 में चर्चा की गई है। आप इस चर्चा को पुन: पढ़िए ताकि आप व्यापारिक पूंजी की वृद्धि, विदेश में व्यापारिक औपनिवेशिकीकरण का दुबारा स्मरण कर सकें। इस क्रांति में प्रौद्योगिकी की तीव्र वृद्धि हुई और इसके साथ-साथ पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में भी प्रगति हुई। मार्क्स ने पूंजीवाद को एक ऐसी ऐतिहासिक अवस्था माना जिसका स्थान समाजवाद लेगा।

आइए, अब इकाई का सारांश पढ़ने से पहले बोध प्रश्न 4 पूरा कर लें।

बोध प्रश्न 4

निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तरों पर निशान लगाइए।

i) किस उत्पादन प्रणाली में भूमि का सामुदायिक स्वामित्व होता है ?

   अ) एशियाटिक

   ब) प्राचीन

   स) सामन्तवादी

   द) पूंजीवादी

ii) किस उत्पादन प्रणाली में उत्पादकों (producers) को निजी सम्पति माना जाता है ?

   अ) एशियाटिक

   ब) प्राचीन

स) सामन्तवादी

द) पूंजीवादी

iii) किस उत्पादन प्रणाली के अंतर्गत श्रमशक्ति बेची व खरीदी जाती है ?

अ) एशियाटिक

ब) प्राचीन

स) सामन्तवादी

द) पूंजीवादी

iv) सामन्तवादी उत्पादन प्रणाली में अतिरिक्त (surplus) उत्पादन को किस माध्यम से हड़प लिया जाता है ?

अ) लाभ

ब) किराया

स) सट्टा

द) अतिरिक्त मूल्य

इ) व्यापार

7.7 सारांश

मार्क्सवादी सामाजिक सिद्धांत में उत्पादन शक्तियां, सम्बन्ध तथा प्रणाली की अवधारणाएं केन्द्रीय हैं। उत्पादन प्रणाली उत्पादन शक्ति और सम्बन्धों से बनती है और मार्क्स के अनुसार ये सामाजिक प्रक्रिया के प्रमुख निर्धारक होते हैं।

उत्पादन की शक्तियां आर्थिक वस्तुओं के उत्पादन में प्रयुक्त कच्चे माल तथा उपकरण और तकनीकों को कहते हैं। उत्पादन के सम्बन्ध उत्पादन की प्रक्रिया में उभरने वाले सम्बन्धों को कहते हैं और ये विशेषत: उत्पादन के साधनों के मालिक तथा ग़ैर-मालिक (श्रमिकों) के मध्य सम्बन्ध होते हैं। उत्पादन के सम्बन्धों के अंतर्गत उत्पादों पर स्वामित्व रखने की क्षमता और नियंत्रण शामिल हैं।

इस प्रकार पूंजीवादी समाजों में उत्पादन के सम्बन्ध हैं जो कि पूंजीपति और श्रमिक के मध्य होते हैं और जिसमें पूंजीपति न केवल उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण रखते हैं, बल्कि श्रमिक द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं का मनचाहे ढंग से वितरण, उपभोग अथवा विक्रय कर सकते हैं।

किसी भी समाज की संरचना में उत्पादन के सम्बन्ध और शक्तियां मूलभूत होती हैं। जिन विभिन्न रूपों में विभिन्न समाज संगठित होते हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि उत्पादन की शक्तियाँ उत्पादन के सम्बन्धों से कैसे जुड़ी हैं। उत्पादन के सम्बन्धों की अवधारणा व्यक्तियों के मध्य सम्बन्धों को इतना अधिक इंगित नहीं करती जितना कि सामाजिक वर्गों के बीच सम्बन्धों को इंगित करती है। ऐसा है क्योंकि उत्पादन के सम्बन्ध अनिवार्य रूप से परस्पर विरोधी होते हैं (उदाहरण के लिए पूंजीपति श्रमिकों के श्रम उत्पाद को हड़प लेते हैं)। अत: वर्गों के मध्य भी सम्बन्ध परस्पर विराधी होते हैं।

उत्पादन की कोई भी प्रणाली उत्पादन के सम्बन्धों और उत्पादन की शक्तियों के मध्य सम्बन्ध हैं। एक-दूसरे से उत्पादन की शक्तियों और उत्पादन के सम्बन्धों के बीच सम्बन्धों की विभिन्नता के आधार पर उत्पादन प्रणालियाँ अलग की जा सकती हैं, पहचानी जा सकती हैं। उदाहरण के लिए सामन्तवादी उत्पादन प्रणाली में भूपति के पास कृषकों की उत्पादन की शक्तियों, उपकरणों तथा भूमि पर सीधा नियंत्रण नहीं होता परन्तु कृषक के उत्पादन पर भूपति

का पूरा नियंत्रण होता है। दूसरी ओर, पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली में पूंजीपति उत्पादन की शक्तियों तथा उत्पादन दोनों पर नियंत्रण रखते हैं।

उत्पादन प्रणाली की अवधारणा एक अमूर्त विश्लेषणात्मक अवधारणा है। किसी भी विशिष्ट समाज में किसी नियत समय पर एक से अधिक उत्पादन प्रणाली प्रचलित हो सकती है। फिर भी, यह संभव है कि एक प्रमुख अथवा निर्धारक उत्पादन प्रणाली को पहचाना जा सके, जो कि अन्य सभी उत्पादन व्यवस्थाओं पर प्रभुत्व रखती है। विशेषत: सामाजिक क्रांति के समय में एक ही समाज में एक से अधिक उत्पादन प्रणाली प्रचलित होती है। मार्क्स ने चार उत्पादन प्रणालियों की सैद्धान्तिक अवधारणाएं दी हैं और ये हैं: एशियाटिक, प्राचीन, सामन्तवादी एवं पूंजीवादी। इनमें से अंतिम उत्पादन प्रणाली उसके लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण थी। इकाई 8 में वर्ग एवं वर्ग संघर्ष पर चर्चा की जाएगी जो कि पूंजीवादी समाजों के आर्थिक गठन के मार्क्सवादी विश्लेषण का प्रमुख आधार है।

7.8 शब्दावली

बुर्जुआ — पूंजीपतियों का वह वर्ग, जो कि विकसित देशों में उत्पादन के लिए आवश्यक सभी कच्चे माल, उपकरण (मशीनों तथा कारखानों, फैक्ट्रियों) तथा उपभोग के सभी साधनों का स्वामी होता है (एंजल्स के *प्रिंसिपल्स ऑफ़ कम्यूनिज़्म* में, 1847)

उत्पादन के सम्बन्ध — उत्पादन की प्रक्रिया में उभरने वाले प्रत्यक्ष सामाजिक सम्बन्ध। इन सामाजिक सम्बन्धों के अंतर्गत उत्पादन के साधनों के मालिक तथा गैर-मालिक (श्रमिकों) दोनों के मध्य सम्बन्ध शामिल होते हैं। ये सम्बन्ध उत्पादन पर स्वामित्व की क्षमता एवं नियंत्रण को निश्चित एवं निर्धारित करते हैं।

उत्पादन प्रणाली — उत्पादन की शक्तियों और उत्पादन के सम्बन्धों के मध्य सम्बन्ध को उत्पादन प्रणाली कहा जा सकता है। उत्पादन के तरीके उत्पादन की शक्तियों और सम्बन्धो। के मध्य सम्बन्ध में भिन्नता के आधार पर पहचाने जाते हैं।

एशियाटिक उत्पादन प्रणाली — यह उस समुदाय आधारित उत्पादन व्यवस्था से सम्बन्धित है, जिसमें भूमि का स्वामित्व सामुदायिक होता है और राज्य शक्ति के अस्तित्व की अभिव्यक्ति इन समुदायों की वास्तविक अथवा काल्पनिक एकता से होती है।

प्राचीन उत्पादन प्रणाली — उत्पादन की व्यवस्था, जिसमें मालिक का दास पर स्वामित्व का अधिकार होता है तथा वह उसके श्रम के उत्पादन को दासता के माध्यम से हड़प लेता है और दास को जनन की अनुमति नहीं देता।

सामन्तवादी उत्पादन प्रणाली — यह एक ऐसी उत्पादन व्यवस्था है, जिसमें भूपति किसानों से जमीन के किराये के रूप में उनके अतिरिक्त श्रम को हड़प लेता है।

पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली — यह एक ऐसी उत्पादन व्यवस्था है, जिसमें उत्पादन के साधनों का स्वामी अर्थात् पूंजीपति सर्वहारा वर्ग से लाभ के रूप में अतिरिक्त श्रम करवाते हैं।

दास — प्राचीन उत्पादन प्रणाली में उत्पादकों का वह वर्ग जो कि

	मालिकों द्वारा निजी सम्पत्ति के रूप में सीधे नियंत्रित किया जाता है
भूमिहीन किसान	सामन्तवादी उत्पादन के तरीके में उत्पादकों का वह वर्ग जिनका अतिरिक्त श्रम किराये के माध्यम से हड़प लिया जाता है
श्रमिक अथवा कामगार	पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली में उत्पादकों का वह वर्ग जिनके पास अपनी आजीविका कमाने के लिए अपनी श्रमशक्ति के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है और इनके अतिरिक्त श्रम को पूंजीपति लाभ के माध्यम से हड़प लेते हैं।
मालिक	दास प्रथा में वह शासक वर्ग, जो कि दासों पर नियंत्रण रखते हैं। इसी प्रकार, यह कहना भी सही है कि पूँजीवादी व्यवस्था में सर्वहारा वर्ग सिर्फ़ श्रमशक्ति का मालिक होता है। दूसरी ओर, पूँजीपति उत्पादन के साधनों का मालिक होता है। इस इकाई के संदर्भ में 'मालिक' शब्द इन रूपों में प्रयुक्त हुआ है।
सामंती भूपति	सामंतवाद का वह शासक वर्ग, जो भूमिहीन कृषकों पर अप्रत्यक्ष नियंत्रण रखते हैं
पूंजीपति	पूंजीवाद में वह शासक वर्ग जो उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण रखता है

7.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

बॉटोमोर, थॉमस बी., 1975, *मार्क्सिस्ट सोशियॉलौजी,* मैकमिलन: लंदन

ह्यूबरमैन, लिओ, 1969, *मैन्स वर्ल्डली गुड्स,* पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस: नई दिल्ली

7.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

i) फ
ii) अ
iii) ब

बोध प्रश्न 2

i) इ
ii) स
iii) अ
iv) ब

बोध प्रश्न 3

i) इ
ii) स

बोध प्रश्न 4

i) अ
ii) ब
iii) द
iv) ब